नासिरा शर्मा की कहानियों में नारी शोषण

डॉ. श्रीकला. के.ऐ

श्रीमती नासिरा शर्मा आधुनिक महिला कहानीकारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उनका साहित्य जगत में प्रवेश मूलत: कहानी के माध्यम से हुआ है। उन्होंने अपनी कहानियों में समाज में व्याप्त कुप्रथाएँ, अंधविश्वास, अन्याय, नारी शोषण, बाह्याडंबर एवं खोखलेपन का यथार्थ चित्रण किया है। नारी जीवन के प्रति उनकी दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म रही है। उनकी कहानियों में समाज के भिन्न-भिन्न पात्र होते हुए भी समाज और पात्र जाने पहचाने लगते हैं। समाज में नारी की भोग्य स्थिति को उभारकर उन्होंने पुरुष की शोषक वृत्ति की ओर संकेत किया है।[1]"वस्तुत: नासिरा शर्मा नारीवादी लेखिका न होकर चेतना के विकास की संवेदनशील सार्थक रचनाकार है।" उनके अनुभव का विशेष क्षेत्र मुस्लिम परिवार की नारी नियति और उसका अमानवीय शोषण है। पुरुष द्वारा नारी का शोषण हर समाज में होता है। लेकिन मुस्लिम समाज में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। उन्होंने नारी मन के अनेक पहलुओं को गहरी संवेदना के साथ अंकित किया है।

नासिरा शर्मा के अब तक नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'बावली' कहानी का मुख्य पात्र सलमा का चित्रण पानी से भरी बावली के रूप में हुआ है। सलमा के विवाह पूर्ण जीवन अभावों और उपेक्षाओं के साथ गुज़ारा था। कहानी की पहली पंक्ति ही सलमा की व्यथा का बयान करती है-[2] "मैं अपने को हमेशा से दूसरों में बैंटती आई हूँ ठीक बावली के पानी की तरह जिस किसी को प्यास लगी , मेरी वजूद की सीढ़ियाँ उतरता सीधा नीचे चला आया और अपना खाली बर्तन भरकर ले गया।" खालिद के साथ शादी होने के बाद ही उसे अपने घर एवं अपने लोगों का सुख प्राप्त होता है। विवाह के सात वर्ष बाद भी उसकी गोद नहीं भरी, तब वह सुहेला नामक लड़की से खालिद की शादी तय करती है। वह सोचती है बचपन छत की तलाशों में गुजरी और आज छत है तो पैर के नीचे से ज़मीन गायब हो रही है। सलमा एक तरफ अपने पति को दूसरी शादी केलिए सजा रही है और दूसरी ओर अपने अंधकारपूर्ण, अधूरी जीवन के हादसों से भरी हुई है।[3]" अम्मा और आपके अरमानों की तरह मेरे दिल में भी अरमान हैं कि मेरी गोद भरे। मेरे तन से न सही किसी और के तन से आपके वजूद को मैं अपने आगोश में लेकर प्यार कर सकूँ।.....शादी के सात साल गुज़र गए। मेरी गोद न भरी। इसमें अम्मा का क्या कसूर। सुलेहा बडी प्यारी लडकी है। मैं खुद देखकर पसंद कर चुकी हूँ। आप यूँ परेशान न हों।" नासिरा शर्मा ने मानवीय संबंन्धों को समय और समाज के संदर्भ में जाँच पड ताल की है। उनके अनुसार समाज कहीं का भी हो, इसमें जीवित लोग अपने अस्तित्व केलिए संघर्ष करते रहते हैं। कट्टर मजहबी ताकते धर्म की रक्षा के नाम पर अधार्मिक, अमानवीय कुकृत्य करते रहते हैं।

'ताबूत' कहानी भी निम्नवर्गीय परिवार की अभावग्रस्त ज़िन्दगी को रेखांकित करती है। इस कहानी में लेखिका ने अविवाहित लड़कियों का अपने ही परिवार द्वारा होनेवाला शोषण प्रस्तुत किया है। 'पहली रात' कहानी भी नारी पर होनेवाले अत्याचारों पर केंन्द्रित है। लेखिका ने मनुष्य की संवेदन शीलता के साथ उसमें छुपे हुए हैवान को भी पहचाना है। यहाँ लेखिका ने मनुष्यों के चारित्रिक पतन के कई धरातलों को परखा है।

'कागज़ी बादाम' कहानी में लेखिका ने निम्नवर्गीय लोगों की आर्थिक समस्या और इससे संबंधित नारी शोषण को चित्रित किया है। अजीज डगरवाल फूल के बाग में मज़दूरी करता था। लेकिन तुरन्त ही उसे मज़दूरी नष्ट होता है। पत्नी भी बीमार है, इलाज केलिए रुपये नहीं है। अजीज के एक मित्र उनकी बेटी को एक घर में काम पक्की करता है। पर माँ इससे सहमत नहीं थी। एक दिन वह अपनी बेटी को घर लाने केलिए चली जाती हैं। लेकिन उस घर में ताला लगाया था।

'ततइया' कहानी भी नारी शोषण को उजागर करती है। विवाहित शन्नो को एक आदमी मेले से घसीटकर ले जाता है। घर से नवविवाहित दुल्हन गायब होने से उसकी सास क्रोधित होती है। बेटा माँ को बार-बार समझाता है कि शन्नो बेकसूर है। लेकिन वह मानने को तैयार नहीं होती है। 'दगवाज़ा ए कजबिल' कहानी भी नारी शोषण पर लिखी गयी है।

इस तरह नासिरा शर्मा की कहानियाँ युगों से पिछडी शोषित नारी का वक्तव्य है। वे मुस्लिम समाज के खोखले कानून, रीति-रिवाज़ और पर्दों में कैद नारी की पोल खोलती है। उन्होंने नारी मन की त्रासदी को अलग दृष्टि से देखा, परखा और अपने संवेदनशील मन से सशक्त रूप में प्रस्तुत भी किया है। इसलिए ही उनकी कहानियाँ अपनी एक अलग पहचान रखती है। निसंदेह इन्होंने हिन्दी कहानी को एक नया अर्थ दिया ।

संदर्भ सूची

1. समकालीन लेखिकाओं के इपन्यासों में नारी- डॉ. रेखा पाटील- पृष्ठ.सं: 83- - विद्या प्रकाशन, कानपूर,2013
2. नासिरा शर्मा- दस प्रतिनिधि कहानियाँ- पृष्ठ.सं: 18- किताबघर प्राकाशन,नई दिल्ली,2003
3. वही - पृष्ठ.सं:23

सहायक ग्रंथ सूची

1. साठोत्तर हिन्दी कहानियों में नारी-डॉ. पुष्पा गायकवाड- विकास प्रकाशन, कानपूर,2013
2. महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य- डॉ. भारती शेळके- विद्या प्रकाशन, कानपूर,2014
3. समकालीन महिला लेखन एवं नारी चेतना- सं:-डॉ.गजाला वसीम अब्दुल बशीर, डॉ. वसंत गणपत माली- विकास प्रकाशन, कानपूर,2015

डॉ. श्रीकला. के.ऐ
असोसियेट प्रोफेसर
गवर्नमेंट विक्टोरिया कॉलेज
□□□□□□□□